Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 13 ~ Issue 9 (September 2025) pp: 72-78
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

जेन्डर एवं शहरी क्षेत्र : मध्य हिमालयी क्षेत्र में जेन्डर अस्मिता (पहचान) की अभिव्यक्ति का अध्ययन धारचूला की भोटिया जनजाति के संदर्भ में

[1]आशा गोस्वामी , [2] प्रो० दिव्या उपाध्याय जोशी

राजनीति विज्ञान विभाग डी0 ए0 बी0 परिसर नैनीताल,उत्तराखंड|

सारांश - *यह शोध मध्य हिमालयी क्षेत्र के उत्तराखंड राज्य के धारचूला निवासरत भोटिया जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में जेन्डर अस्मिता की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि शहरीकरण, शिक्षा, प्रवास, तथा आधुनिक आर्थिक प्रणालियों के प्रभावों के चलते इस पारंपरिक जनजातीय समुदाय में लिंग आधारित पहचान, भूमिकाएं तथा सामाजिक संरचनाएं किस प्रकार रूपांतरित हो रही हैं। भोटिया जनजाति की पारंपरिक जीवन-शैली में जेन्डर की स्पष्ट भूमिकाएं निहित रही हैं; तथापि, शहरी प्रभावों एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं ने इन भूमिकाओं में परिवर्तन की प्रक्रिया को जन्म दिया है। यह शोध विशेष रूप से महिला अस्मिता, लिंगानुसार कार्य विभाजन, निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में भागीदारी, का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।शोध की पद्धति में गुणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है, जिसमें क्षेत्रीय अध्ययन, साक्षात्कार, प्रतिभागी अवलोकन एवं प्रासंगिक साहित्य समीक्षा सम्मिलित हैं। यह शोध भोटिया समाज में पारंपरिकता और आधुनिकता के मध्य अंतर्संवाद को रेखांकित करते हुए, जेन्डर विमर्श के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।*

प्रमुख शब्द (Keywords :

भोटिया जनजाति, जेन्डर अस्मिता, लिंग आधारित भूमिकाएं, सामाजिक संरचना, शहरीकरण|

Received 27 Aug., 2025; Revised 02 Sep., 2025; Accepted 04 Sep., 2025 © The author(s) 2025. Published with open access at ***www.questjournas.org***

प्रस्तावना

जेंडर संरचना कम या आंशिक रूप में सब जगह विद्यमान है। जेंडर संरचना केवल महिला की पहचान और उसकी समस्या से ही सम्बद्ध नहीं है वरन् इसमें पुरूष के अस्तित्व के प्रश्नों के अंश भी विद्यमान हैं। पुरूष और स्त्री साथ मिलकर ही जेन्डर विचारधारा और सामाजिक मूल्यों का निर्माण करते हैं। समाज की समस्त गतिविधियां राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक में जेन्डर संरचना विद्यमान है। इस प्रकार यह शहरी जीवन का एक सर्वव्यापी और आवश्यक पहलू है। यह शहरी अस्मिता का एक प्रभावशाली आयाम है जो शहरी जीवन की दैनिक कार्यप्रणाली को जीवन्त करता है।

जेन्डर को प्रायः एक समस्या अथवा विशेषतः स्त्री से संबंधित एक अतिसंवेदनशील मुद्दे के रूप में देखा जाता है। केवल

कुछ अध्ययनों में ही जेंडर इस समस्यात्मक श्रेणी में नहीं देखा जाता है। जो विद्वान संरचनावाद से जुड़े हुए हैं उन्होंने भी जेंडर को शहरी वातावरण में स्त्री के अनुभव के रूप में लिया है। आधुनिक समय में शहरी अध्ययन में जेंडर को समझने के लिए इसके उभरते उपागम जैसे अभिव्यक्ति और पहचान सफल सिद्ध हो सकते हैं।(LiosMcNay, 2000; 2003; 2004),(saba Mahmood, 2001; 2005) and Sherry Oetner (2006)

विशेषज्ञों द्वारा शहरी जीवन में जेंडर का विश्लेषण करने के लिए , मुख्यतः तीन प्रकार के उपागम बताए गए हैं, जो कि क्रमशः genderअभिव्यक्ति , संबंध और प्रस्तुतीकरण है। विद्वानों ने यह उजागर करने का प्रयास किया है कि जेन्डर अध्ययन में जेंडर को केवल मूर्त रूप में न समझकर उसे सापेक्ष विशेष परिस्थितियों के एक परिवर्तनशील जीवन्त अनुभव के रूप में समझना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि महिलाओं की व्यक्तिपरकता और “एजेंसी” पर ध्यान देना जरूरी है, जिसके अन्तर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष से प्रभावित महिलाओं का व्यवहार सम्मिलित है। Lios mcNay (2003; 2004), Saba Mahmood (2001; 2005) and Sherry Ortner (2006).. एजेंसी कार्यवाही करने वाली एक सार्वभौमिक क्षमता है पर साथ ही यह ए क सामाजिक, सांस्कृतिक माध्यम भी है। एजेंसी को ए क विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष की माँग के अनुसार व्यक्त करने वाली अभिक्षमता के रूप में समझना महत्वर्पूण है क्योंकि वैश्विक स्तर पर प्रत्येक स्थान का दूसरे स्थान से भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य होता है। कुछ ((Lios mcNay,2004)), ने जेंडर विश्लेषण के केन्द्रीय बिन्दु पर एक जीवन्त अनुभव के रूप में एजेंसी एवं उसमें निहित अन्र्तसंबंधों को रखा है।

जेन्डर अभिव्यक्ति (Gender Embodiment)- जेंडर को मानव की शारीरिक विभिन्नताओं को लेकर विद्यमान सांस्कृतिक व्याख्याओं के एक भाग के रूप में बताया जाता है। नगरों की जेन्डर संबंधी वास्तविकताओं से संबंधित कार्यों में Jacqueline Tivers ने शहरों को पुरूषों के लिए पुरूषों द्वारा अपने अनुकूल निर्मित तथा महिलाओं के प्रतिकूल डिजाइन किया गया बताया है। Tivers (1985), ने उदाहरणार्थ दक्षिणी लंदन में महिलाओं के सामाजिक-स्थैतिक बाधाओं के अनुभवों को ध्यान में रखकर महिलाओं को उनके छोटे बच्चों के साथ की उनकी दैनिक जीवन शैली को उजागर करने का प्रयास किया गया |अधिकतर शोधकर्ताओं ने अपने शोध में महिलाओं में भय तथा उसके विरोधाभास को विस्तृत रूप से देखने का प्रयास किया जिसमें यह पता चला कि वृद्ध पुरूष और सभी उम्र की महिलाएं अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा हिंसक अपराधों से अधिक भयभीत रहते हैं । परन्तु वास्तविकता में युवा पुरुष इन खतरों से अधिक पीडित हैं । महिलाएं सार्वजनिक क्षेत्र में अपरिचित पुरूषों से ज्यादा डरती है। परन्तु वे परिचित पुरूषों द्वारा निजी क्षेत्र में किए गए हिंसक अपराधों से ज्या दा पीडित हैं । (शहरी क्षेत्र में महिलाओं के अस्तित्व से संबंधों में दो प्रकार की अवधारणा निकल कर आती हैं जिसमें से एक धारणा शहरी क्षेत्र में महिलाओं की स्वतंत्रता तथा दूसरी धारणा परिवार में उनकी अस्तित्वहीन स्थिति को दर्शाती है।

शहरी जीवन की लैंगिक वास्तविकताओं से संबंधित शोध के इस निष्कर्ष को चुनौती दी गई है कि शहरों में महिलाओं का डर अतार्किक है तथा इसका कोई औचित्य नहीं है। (Valentine 1989) उनके अनुसार महिलाओं को प्रतिदिन दमनकारी, आशंकाओं और खतरों का सामना करना पडता है। तथा स्वयं स्त्रियाँ भी इन स्थितियों का सामना करने के बजाय इन्हें स्वीकार करती है। महिलाएं स्वयं को घरेलू हिंसा का शिकार होने देती हैं क्योंकि वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था में ढली रहती है और प्रतिरोध करने का प्रयत्न भी नहीं करती है।[5] इसी प्रकार (Rachel Pain (1991) ने यह दर्शाया है कि कैसे पुरूष की अभिव्यक्ति और उनके भाव महिला के प्रतिकूल विचारों को बढावा दे रहे हैं तथा हिंसा के बढते विभिन्न स्वरूपों में महिलाओं के डर को आसानी से समझने योग्य बना दिया है।

शहरी क्षेत्रों के महिला विरोधी चित्रण ने अस्थिर पैमाने पर आलोचकों को आकर्षित किया है। उनके द्वारा पुरूष प्रभुत्व समाज में महिलाओं के शोषण की बात का विरोध किया गया है। उदाहरणर्थ Hille Koskela (1997) और Carolyn Whitezman (2002) ने शहरीक्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय तथा प्रतिरोधात्मक क्षमता सम्पन्न उपस्थिति पर जोर दिया है। जबकि Anna Metha and Liz Bondi (1999) ने यह दर्शाया है कि कैसे महिला और पुरूष दोनों मिलकर

सक्रिय रूप से डरपोक महिला और निडर पुरूष की काल्पनिक कथाओं के निर्माण में अपनी भूमिका निभाते है तथा शहरी क्षेत्र में महिला और पुरूष की क्रमशः भययुक्त और भयमुक्त भूमिका को उचित ठहराते हुए उसका पालन करने पर जोर देते इसके अतिरिक्त कुछ आलोचकों ने यह माना है कि शहरों में महिलाओं का जीवन उत्तम कोटि का तथा खुशियों से भरा हुआ होता है जहाँ उन्हें जेंडर और लैंगिकता से सम्बन्धित रूढिवादी संर्कीण विचारों को दरकिनार करने का अवसर मिल जाता है। (Wilson 1990) उदाहरणर्थ, शहरों में महिलाओं ने पुरूष प्रधान व्यवसायों में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है।(Mc Dowell 1997) महिलाओं ने घरेलू कार्यों से बाहर निकलकर पुरानी जेंडर रूढिवादी विचधाराओं को चुनौती दी है। (Hayden 1981; Rose 1989) शहरी क्षेत्र पुरूष प्रभुत्वशाली मान्यताओं को व्यापक रूप से चुनौती देने की संभावनाओं को खोजने का मौका देता है।(Brown 2000; Bell and Valentine 1995; Bell et al.1994; Duncan 1996;Hubbard 2005)

क्षेत्र और संस्थानों की भूमिका(Role of space and institution):-

यद्यपि परम्परागत रूप से संस्थानों जैसे स्कूलों और विश्वविद्यालयों को एक स्थूल कृत्रिम रूप से निर्मित संस्था के रूप में ही देखा जाता था। परन्तु वर्तमानअध्ययनों में संस्थाओं की अवधारणाओं का पुनर्मूल्यांकन किया गया है। जिसमें इन संस्थाओं को स्रोत , ज्ञान व शक्ति के नेटवर्क के रूप में देखा गया है जो स्वतः तथा व्यक्तियों द्वारा रूपान्तरित हुए है तथा जिनके द्वारा व्यक्तियों का भी रूपान्तरण किया गया है।(Valentine 2001:141-2)इसलिए स्कूलों को एक सामाजिक संस्थान के रूप में एक सीमित प्रभाव का क्षेत्र नहीं समझा जा सकता बल्कि उसे विद्यार्थियों, परिवारों, कर्मचारियों , प्रशासन तथा क्षेत्र जहाँ उनके व्य वहार का क्रियान्वयन होता है, उस शक्ति संबंध के समूह के रूप में समझा जा सकता है। संस्थायें , जैसे कि स्कूल नियन्त्रित और अनुशासन के शक्ति संबंधों की विशेषताओं के रूप में देखे जाते हैं| (Holloway and Hubbard 2001:187)और इस प्रकार ये सामाजिक पदसोपान और असमानता को पुनर्निर्मित करते है। इन संस्थानों में वयक्ति विशेष के व्यवहार और दृष्टिकोण का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। क्यों कि इनके विचार संस्थागत विचारों के प्रतिबिम्ब होते हैं |(Goetz 1997:5)

Holt ने अपनेअध्ययन में मुख्य धारा के प्राथमिक विद्द्यालयों (2004) के उन मार्गो को खोजा जो अस्मिता का पुनर्निर्माण असंबद्ध और नियमित रूप से करते है। उन्होंने शोध में यह दर्शाया कि शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों में एक अदृश्य पाठ्य क्रम (Hidden Curricula) विकसित कर लिया गया हैं जिसमें विद्यार्थी अपनी उचित लैंगिक पहचान व स्थिति को बनाये रखना सीख जाते है। जेंडर अस्मिता और संबंधों पर विचार और इनका प्रवर्तन इन्हीं छिपे पाठ्यक्रमों द्वारा होता है।(Dunne et al. 2006:78) इस प्रकार स्कूल पूर्वस्थापित सामाजिक व्यवस्था को पुनः उत्पादित करने में सहायता प्रदान करते हैं। स्कूली कक्षाओं में विद्यार्थियों के शारीरिक व व्य वहारिक क्रियाओं को उनके लिंग के अनुसार निय मित किया जाता है। (Del Casino)

भारत में बढते शहरीकरण के कारण जेंडर संबंधों और भूमिकाओं, परम्परागत सेक्स-जेंडर विभेद एवं हेट्रो-नारमेटिव व्यवस्था का निरन्तर पुनर्निर्माण हो रहा है। वर्तमान में जेंडर भूमिकाओं एवं जेंडर संबंध के विषय में निरन्तर सामाजिक संवाद एवं राजनितिक विवाद प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत है। भारत के मध्य हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। यहां पर दशकीय पुरूष प्रवासन, निम्न पर्वतीय कृषि परिदृश्य असमुचित इको-सर्विस और छोटे कस्बों व शहरों का अनियोजित शहरीकरण देखने को मिलता है तथा साथ ही वैश्वीकरण और सांस्कृतिक आधुनिकीकरण का सामाजिक परिदृश्य पर प्रभाव भी दृष्टिगोचर हो रहा है।

भारत में जेंडर को लेखकों एवं शोधार्थियों द्वारा प्रायः ए क समस्या के रूप में देखा गया है। अधि कतर अध्ययन ग्रामीण परिदृश्य जेंडर और महिला सशक्तिकरण के मुद्दों पर केंद्रित है। जेंडर के तीन उपागम (अभिव्यक्ति, संबंध तथा भूमिका) और जेंडर के परम्परागत अध्ययन के बीच रिक्तता आ गई है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन तीनों उपागमों का प्रयोग कर गुणात्मक केस अध्ययन के माध्यम से शहरी क्षेत्र में हो रहे जेंडर के पुनर्निर्माण का आलेखन करना है।

इस अध्ययन का उद्देश्य साधारणतः यह अवलोकित करना है कि स्त्री जेंडर की पहचान शहरी दैनिक कार्य प्रणाली में कैसे निरन्तर निर्मित और पुनःनिर्मित हो रही है। इस अध्ययन की रूपरेखा इस प्रकार बनाई गई जिससे शहरी क्षेत्र और संस्थाओं द्वारा जेंडर की पहचान में होने वाले (पुनः) अवतरण और संरचना के तरीकों को उजागर किया जा सके। विशेष रूप से शहरी युवतियों में जेंडर की पहचान के पुनःनिर्माण एवं स्टीरियोटाइप का अध्ययन एवं जेंडर असमानता बनाये रखने वाले शक्ति संबंधों का भी अध्ययन भी इसके भीतर किया जा सके |

शोध समस्या : किस प्रकार शहरी क्षेत्र द्वारा जेन्डर अभिव्यक्ति (Embodiment) को प्रभावित किया जा रहा है ?

उद्देश्य

1. मध्य हिमालय में शहरीकरण एवं शहरी क्षेत्र द्वारा महिलाओं में जेन्डर अभिव्यक्ति (embodiment)में आये बदलाव का अध्ययन |
2. मध्य हिमालय में शहरी युवतियों में जेन्डर अस्मिता के निर्माण एवं विद्यमान स्टीरियो टाइपओं का अध्ययन |
3. मध्य हिमालय में शहरी क्षेत्र में जेन्डर असमानता को बनाए रखने वाले शक्ति संबंधों का अध्ययन |

शोध समस्या पर गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए जिसमें जेन्डर अस्मिता एवं अनुभव सम्मिलित है) गुणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है| इस प्रकार के शोध के लिए जिसमें जीवित अनुभवों का अध्ययन किया जा रहा है गुणात्मक पद्धति सबसे उपयुक्त है | इस शोध में मानवजातीय वर्णन द्वारा एक विशेष शहर / कस्बे में स्थित एक स्कूल का विश्लेषण किया गया है तथा सांख्यकी प्रतिरूप को इसमे सम्मिलित नहीं किया गया है इस जेन्डर संरचना में मध्य हिमालय के धारचूला कस्बे के रा 0 बा 0 इ 0 कालेज की 16-18 वर्ष के आयु समूह की छात्राओं को सम्मिलित किया गया |

दुर्गम होने के कारण धारचूला में शहरीकरण उत्तराखंड राज्य के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा देर से प्रारंभ हुआ है |यहाँ के निवासियों में भोटिया जनजाति मुख्य है |जिनकी अपनी जनजातीय सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशेषताएं हैं |धारचूला में शहरीकरण के कारण (पहली और दूसरी पीढ़ी निवासी) भोटिया जनजाति में से अधिकतर अपनी जनजातीय जीवनशैली छोड़ चुके हैं |यहाँ पर शहरीकरण का जेन्डर के निर्माण में निरन्तरता और अन्तः पीढ़ीगत प्रभाव अधिक स्पष्ट है |

प्रस्तावित पद्धतियाँ (proposed methods):

इस शोध में गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है |यह प्रमुखतः एथनोग्राफी है | जिसमें निम्न पद्धतियों के प्रयोग द्वारा तथ्य संकलित किए गये हैं |

उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के धारचूला शहर को सोउद्देश्य नमूना के चयन के द्वारा चयनित किया गया है |धारचूला शहर के सबसे बड़े कन्या शैक्षिक संस्थान राजकीय बालिका इन्टर कॉलेज में इस अध्ययन को किया गया |इस विद्यालय की छात्राएं शहर के समस्त वर्गों से आती हैं |इसलिए इसमे प्रतिनिधि अध्ययन करना संभव हुआ |शोध प्रश्न संबंधित तथ्यों को निम्नांकित पद्धतियों द्वारा सम्पन्न किया गया |

1. **सहभागी अवलोकन :** प्रतिदिन विद्यार्थियों , कर्मचारियों के व्यवहार तथा शहरी क्षेत्र में इनके गतिशील संबंधों का अध्ययन किया गया |आकस्मिक ,अनऔपचारिक वार्तालाप और अवलोकन किया गया ,जिसके द्वारा साक्षात्कार और वास्तविक जीवन के अनुभवों के मध्य भिन्नता का निरीक्षण किया गया |
2. **गुणात्मक साक्षात्कार तथा केन्द्रीय समूह परिचर्चा** : इसमे लगभग 100 छात्राओं का साक्षात्कार लिया गया |साक्षात्कार अर्धसंरचनात्मक प्रकार के रखे गए जिससे छात्राएं वार्तालाप के माध्यम से उसे अपनी दिशा में मोड़ने में समर्थ रही ओर खुल कर अभिव्यक्ति की गई |ये साक्षात्कार चार से छह छात्राओं के समूह में संचालित

किए गए ताकि छात्राएं सुविधा से अपने जवाब से पाएं |केन्द्रीय समूह परिचर्चा द्वारा शोधार्थी को सहायक तथ्य मिलने में सहायता मिली |और यह संवाद न्यूनतम हस्तक्षेप के किया गया

3. **जीवन वृतांत (इतिहास)**- धारचूला में रहने वाली 16-18 वर्ष के आयु वर्ग की 10 छात्राओं के जीवन व्रतांत को संग्रहीत किया गया इस पद्धति के उपयोग का उद्देश्य उन कहानियों और जीवनियों को स्वर देना था जो अन्यथा अनकही और अनसुनी रह सकती थी | इस गुणात्मक तकनीक ने व्यक्तियों को अपने जीवन अनुभव को बया करने का मौका दिया |साथ ही इसने शोधार्थी को अस्मिता की संरचना और प्रस्तुतीकरण में होने वाले परिवर्तनों के संदर्भ में प्रचुर सामग्री ओर प्रतिलेख उपलब्ध करवाने में सहायता दी |

   प्रतिभागी 10 छात्राओं के परिवार की अन्तः पीढ़ीगत प्रोफाइल (दो से अधिक पीढ़ियों में होने वाले परिवर्तन)को रिकार्ड किया गया |

   साक्षात्कार और जीवन व्रतांत के लिए प्रतिभागियों के चयन स्नो-बाल सैंपलिंग पद्धति द्वारा किया गया |प्रथम परिचायक (gatekeeper) द्वारा एक प्रतिभागी छात्र का चयन किया गया तथा उसके बाद उस चयनित छात्रा द्वारा दूसरे प्रतिभागी का चयान किया गया |इसी क्रम में 10 प्रतिभागियों का चयन किया गया |

विश्लेषण

यह शोध सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन महिलाओं की स्वायत्तता, जेंडर अभिव्यक्ति और पारिवारिक संरचनाओं में बदलाव के साथ जुड़ा हुआ है। धारचूला क्षेत्र के रं समुदाय में सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक रीति-रिवाज और लैंगिक भूमिकाएँ समय के साथ महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित हुई हैं। विशेषकर विवाह, पहनावा, और महिलाओं की सामाजिक भूमिका में यह बदलाव स्पष्ट रूप से तीन पीढ़ियों में देखा जा सकता है। यह अध्ययन इन बदलावों के विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक आयामों को उजागर करता है।

पहली पीढ़ी में विवाह प्रायः लड़कियों की सहमति के बिना पारिवारिक निर्णय या बलपूर्वक संपन्न होता था। अल्पवयस्क विवाह, बहुविवाह, तथा स्त्रियों की सीमित भूमिका इस युग की प्रमुख विशेषताएं थीं। धीरे-धीरे सामाजिक सहमति, मंगनी, और पंचायत की भूमिका ने विवाह व्यवस्था को अधिक समावेशी बनाया। वर्तमान पीढ़ी में विवाह व्यक्तिगत पसंद, सहमति और समानता पर आधारित संस्था बन गई है। अंतरजातीय और अंतरसांस्कृतिक विवाहों की स्वीकृति तथा स्त्रियों की शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता इस बदलाव को और भी सुदृढ़ करती हैं।

प्रारंभिक पीढ़ी के पारंपरिक वस्त्र (जैसे झगुला, चुंग बाला) मर्यादा और सामाजिक अनुशासन के प्रतीक थे। मध्य पीढ़ी में शहरीकरण और शिक्षा के प्रभाव से वस्त्रों में विविधता आई, हालांकि सामाजिक प्रतिबंध अभी भी प्रबल थे। वर्तमान पीढ़ी में युवतियाँ वैश्विक फैशन की ओर अधिक आकर्षित हैं और अपने वस्त्र चयन में स्वतंत्रता दिखाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक नियंत्रण अभी भी अपेक्षाकृत मजबूत है, खासकर महिलाओं के वस्त्रों को लेकर।रं समुदाय की महिलाएं घरेलू कार्यों के साथ-साथ कृषि, पशुपालन, वानिकी जैसे श्रम में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। यह श्रम सामाजिक जीवन की आधारशिला है, हालांकि अधिकांशतः अवैतनिक और अवमूल्यित रहा है। महिलाओं ने इस श्रम के माध्यम से सम्मान अर्जित किया है, पर निर्णय प्रक्रियाओं में उनकी भूमिका अभी भी सीमित है।

संयुक्त परिवारों की सामूहिकता और सहयोग को बुजुर्ग महिलाएं अधिक महत्व देती हैं, जबकि मध्यम आयु वर्ग और युवतियाँ एकल परिवारों की स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक बंधनों में कमी आ रही है और महिलाएँ अपनी जीवनशैली को अधिक स्वतंत्रता के साथ परिभाषित कर रही हैं।

समुदाय में स्त्री-पुरुष बराबरी की बात की जाती है, लेकिन निर्णय लेने में पुरुषों का प्रभुत्व स्पष्ट है। महिला की राय को अक्सर कम महत्व दिया जाता है, जिससे पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचना की पुष्टि होती है। सामाजिक परिवर्तन के बावजूद यह व्यवस्था पूर्णतः परिवर्तित नहीं हुई है।

धार्मिक अनुष्ठानों में महिलाओं की भूमिका सीमित है। मासिक धर्म से जुड़ी मान्यताएँ स्त्रियों की सामाजिक भागीदारी को बाधित करती हैं। यह परंपराएँ महिलाओं के अधिकारों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में व्याप्त असमानता को दर्शाती हैं।

निष्कर्ष

धारचूला के रं समुदाय में महिलाओं की भूमिका, विवाह व्यवस्था, और पहनावे में आए सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन आधुनिकता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम हैं। महिलाएं अब पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देते हुए अपने अधिकारों, स्वायत्तता और पहचान के लिए संघर्षरत हैं। हालांकि पितृसत्तात्मक ढाँचा अभी भी प्रभावी है, भविष्य में शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण, और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से लैंगिक समानता की दिशा में प्रगति संभव है।

नैतिक विवेचना - इस शोध कार्य में साक्षात्कारदाता के सममूक शोध कार्य कर उद्देश्य और परिचर्चा के केन्द्रीय विषय को स्पष्ट करने के उपरांत उनसे मौखिक या लिखित सहमति के पश्चात ही साक्षात्कार लिया गया |साक्षात्कारदाता की गोपनीयता की प्रतिबद्धता को भी ध्यान में रखा गया | उसे कभी भी स्वेछया से ली प्रतिभागिता छोड़ने का अधिकार दिया गया | छात्राओं को खाली वादन या मध्यावकाश के दौरान ही परिचर्चा के लिए कठोर प्रतिदर्श के स्थान पर लचीलापन अपनाया गया |

संदर्भ सूची –

[1]. Bondi, Liz (1998) *Gender, class and urban space*. Urban Geography 19, 160-185

[2]. Day, Kirsten (2001) *Constructing masculinity and women's fear in public space* in Gender, Place and Culture 8, 109-127.

[3]. Duncan, Nancy (ed.) (1996) *Body Space: Destabilizing Geographies of Gender and Sexuality.* Routledge, London and New York England

[4]. Hall, S. (1992) *'The Question of Cultural Identity'*. In Hall, S, Held, D, and McGrew, T, 1992. Modernity and its Futures. Polity Press: Cambridge, 273-326.

[5]. Hall, S. (1996) *'Introduction: Who needs identity?'*, in S. Hall and P. Du Gay (eds) Questions of Cultural Identity, London: Sage

[6]. Holloway, L. and Hubbard, P. (2001*) People and place: the extraordinary geographies of everyday life.* England: Pearson Education Limited

[7]. Holt, L. (2004) *'Children with mind–body differences: performing disability in primary school classrooms',* Children's Geographies, 2(2) pp.219-36

[8]. Hubbard, Phil (2005) *Women outdoors: destablizing the public/private dichotomy,* in Lise Nelson and Joni Seager (eds) A Companion to Feminist Geography Routledge, Malden MA, 322-333

[9]. Irigaray, Luce (1993) *Ethics of Sexual Difference* Athlone, London (translated by Carolyn Burke and Gilian C. Gill).

[10]. Jarvis, Helen (2002) *"Lunch is for wimps": what drives parents to work long hours in "successful" British and US cities?* Area 34, 340-352

[11]. Johnston, Lynda (2002) *Borderline Bodies,* in Liz Bondi, et al (ed.), Subjectivities, Knowledges, and Feminist Geographies

[12]. Koskela, Hille, (1997) *Bold walk and breakings: women's spatial confidence versus fear of violence,* Gender, Place and Culture, 4, 301-319.

[13]. Koskela, Hille (2005) *Urban space in plural: elastic, tamed, suppressed*, in Lise Nelson and Joni Seager (eds) A Companion to Feminist Geography Routledge, Malden MA, 257-270

[14]. Longhurst, R, 1995. *'The Body and Geography'*. Gender, Place and Culture. 2(1): 97-105.

[15]. Mirembe, R. and Davies, L. (2001) *"Is Schooling a Risk? Gender, Power Relations, and School Culture in Uganda"*, Gender and Education 13(4) pp.401-416

[16]. Mackenzie, Suzanne & Damaris Rose (1983) *Industrial change, the domestic economy and home life*, in James Anderson, Simon Duncan & Ray Hudson (eds) Redundant Spaces in Cities and Regions, Academic Press, London, 155-200

[17]. McDowell, Linda (1983) *Towards an understanding of the gender division of urban space"*, Environment and Planning D: Society and Space, 1, 59-72

[18]. McDowell, Linda (1991) *Life without father and Ford: the new gender order of post-Fordism Transactions*, Institute of British Geographers 1: 400-419

[19]. McDowell, Linda (1997) *Capital Culture*. Blackwell, Oxford

[20]. Mc Nay, L. (2003) *Gender and Agency: Reconfiguring the Subject in Feminist and Social Theory*. Wiley , New York

[21]. Mehta, Anna & Liz Bondi (1999) *Embodied discourse: on gender and fear of violence*

[22]. Ortner Sherry B. (2006) *Anthropology and Social Theory: Culture, Power, and the Acting Subject.* Duke University Press

[23]. Pain, R, 2001. *'Age, Generation and the Lifecourse'*. In Barke, M, Pain, R, Gough, J, Fuller,
[24]. Pain, Rachel (1991) *Space, sexual violence and social control*, Progress in Human Geography, 15, 415-431.
[25]. Pain, Rachel (1997) *Social geographies of women's fear of crime*, Transactions of the Institute of BritishGeographers, 22, 231-244.
[26]. Pain, Rachel (2001) *Gender, race, age and fear in the city*, Urban Studies, 38, 899–913.
[27]. Roberts, Marion (1991) *Living in a Man-Made World*. Routledge, London.
[28]. Rose, Damaris (1989) *A feminist perspective of employment restructuring and gentrification: the case of Montr*eal, in Jennifer Wolch and Michael Dear (eds) The Power of Geography Unwin Hyman, 118-138
[29]. Rose, Gillian, (1993*) Feminism and Geography*.Cambridge: Polity
[30]. Rothenberg, Tamar (1995) *"And she told two friends": Lesbians creating urban social space* in David Bell and Gill Valentine (eds) Mapping Desire Routledge, London, 165-181.
[31]. Rowbotham, Sheila, (1974*) Hidden from History* Pluto Press, London
[32]. Tivers, Jacqueline (1985) *Women Attached*.Croom Helm, London
[33]. Valentine, Gill (1989) *The geography of women's fear*, Area, 21, 385-390.
[34]. Warren, Tracey (2003) *Class- and gender-based working time?* Time poverty and the domestic division of labour Sociology 37, 733-752
[35]. Whitzman, Carolyn (2002) *Feminist activism for safer social space in High Park, Toronto: how women got lost in the woods*, Canadian Journal of Urban Research, 11, 299-321